

नारायणीयम्
पहला कदम

गहरी विनम्रता और उच्च कृतज्ञता के साथ, मैं अपना यह क्षुद्र प्रयास, स्वर्गीय श्री एन. एस. वैष्णटकृष्णन जी को समर्पित करती हूँ, जिन्होंने मुझे इस अमूल्य काव्य की महानता से अवगत कराया। और साथ ही, मैं स्वर्गीय श्री सी. एस. नायर को भावपूर्ण श्रद्धांजलि देती हूँ, और उनकी आभारी हूँ कि उन्होंने बड़े विश्वास के साथ यह कार्य भार मुझको सौंपा। मेरे माता-पिता को भी नमन।

सूची

पुस्तक के विषय में.....vi	vi
प्रस्तावना 7	7
दशक १ भगवन्महिमानुवर्णनम्..... 10	10

पुस्तक के विषय में

यहां, इस कृति के संस्कृत श्लोकों के शब्दों के अर्थ, श्लोकों में आए क्रम में ही दिये गये हैं, न कि अन्वय के क्रम में। इस प्रयास में, श्री नारायणीयम - प्रकाशक - मोतीलाल जालान, गीताप्रेस, गोरखपुर, की पुस्तक से साहायता ली गई है। एतदर्थ उनका आभार व्यक्त करती हूं।

इस प्रकार के उद्यम के लिए एक महिला स्वाध्याय समिति में आवश्यकता प्रतीत हुई थी। उस समिति में स्वर्गीय सी. एस. नायर यह स्तोत्र पढा रहे थे। उन्होंने अत्यन्त विश्वास पूर्वक यह कार्य मुझे सौंपा। जिसे कर के मैं कृतार्थ हुई। इसके लिए मैं उनकी कृतज्ञ हूं। अत्यन्त दीनता से आभार से यह प्रयास स्वर्गीय एन. एस. वैङ्कटकृष्णन जी को समर्पित करती हूं जिन्होंने मुझे इस महान ग्रन्थ से परिचित करवाया। दोनों को और अपने माता पिता को सादर नमन करती हूं।

इसमें कोई त्रुटि हो अथवा कोई सुझाव हो तो पाठकगण अवश्य देवें।

यह पुस्तक वेबसाइट के जैसे भी उपलब्ध है, इस लिंक पर <http://narayaneeyam-firststep.org>

- आशा मुरारका (ashamurarka@gmail.com)

प्रस्तावना

श्रीमन् नारायणीयम् एक उच्चकोटी का भक्ति प्रधान स्तोत्र है। इसके रचनाकार श्रीनारायण मेपात्तुर भट्टथिरि ने गुरुवायुर मन्दिर में श्री कृष्ण के विग्रह के समक्ष इसकी रचना की, फलस्वरूप उन्होंने अपने वात रोग का निदान तो पाया ही, भगवद् दर्शन के भी पात्र हुए।

भारतीय शास्त्रों में १८ मुख्य पुराण है। इनमें श्रीमद् भागवत् सर्वश्रेष्ठ है। इसमें १८००० श्लोक हैं। नारायणीयम् इसका संक्षिप्त रूप है, और इसमें १०३६ श्लोक हैं। किन्तु फिर भी इसका भक्तिमय और दार्शनिक स्वरूप अक्षुण्ण है।

नारायण भट्टथिरि का जन्म १५६० ईस्वी में हुआ था। इन्होंने १६ वर्ष की आयु में ही समस्त शास्त्रों का ज्ञान अर्जन् कर लिया था। किन्तु उस समय वे भक्ति पथ पर अग्रसर नहीं हुए थे। एक समय उनके गुरु अच्युत पिशारोदी ने उनकी बहुत भर्त्सना की। उसके बाद वे अपने गुरु के प्रति अत्यन्त समर्पित हो गए।

प्रायः १० वर्षों के बाद उनके गुरु वात रोग से पीडित हो गए। भट्टथिरि यह सहन न कर सके और उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि उनके गुरु का रोग उन पर आ जाये। उनकी प्रार्थना स्वीकृत हुई। गुरु को सुस्वास्थ्य प्राप्त हुआ और भट्टथिरि को वात रोग। भट्टथिरि को अटूट विश्वास था कि गुरुवायुर के श्री कृष्ण उनको अवश्य रोग से मुक्त करेंगे। इसी विश्वास के साथ, भगवान की कृपा पाने के लिए उन्होंने गुरुवायुर मन्दिर में जा कर ईश्वर के चरणों में शरण ली।

भट्टथिरि ने उस समय के विद्वान दार्शनिक भक्त थ्युचान्त रामानुज (एजुथाचन्) से मार्गदर्शन के लिए आग्रह किया। उन्हें संकेत मिला कि 'मत्स्य से आरम्भ करो।' भट्टथिरि सहज ही समझ गए कि यह संकेत मत्स्यावतार से ले कर दशावतार की महिमा का वर्णन करने का संकेत है। इस प्रकार भागवत् में आए विष्णु के स्वरूप का संक्षेप में वर्णन करने की प्रेरणा मिली।

वात रोग से पीडित भट्टथिरि ने येन केन प्रकारेण गुरुवायुर मन्दिर में पहुंच कर, स्वयं को पूर्णतः श्री कृष्ण के चरणों में समर्पित कर दिया। वे प्रतिदिन शाष्टाङ्ग दण्डवत करके भक्ति भाव से भगवान का गुणगान करने लगे और प्रार्थना करने लगे। वे प्रतिदिन एक दशक की रचना कर के भगवान के अर्पण कर देते थे। इस प्रकार १०० दिनों में भक्ति से ओतप्रोत १०० दशकों की रचना हुई।

प्रत्येक दशक के अन्त में लेखक ने पीडा से मुक्ति पाने के लिए करुण प्रार्थना की है। तीव्र पीडा में रचित इन दशकों ने ईश्वर की कृपा और करुणा को आकर्षित किया। शीघ्र ही भगवान की कृपा वर्षा हुई, और सौवे दिन भट्टथिरि को रोग मुक्त करके भगवान ने दर्शन दे कर अनुग्रह किया। भट्टथिरि आनन्द विभोर हो गए और सौवें दशक में वे रोते हुए गा उठे - 'अग्रे पष्यामि..' - सम्मुख देखता हूं.. और वे भगवान के मन- मोहक स्वरूप का, सिर से चरण तक, 'केशादिपादं' वर्णन करते हैं।

यह रचना नारायण भट्टथिरि ने २७ वर्ष की आयु में की थी। भगवत्कृपा से उन सम्मानित दार्शनिक भक्त कवि ने ९६ वर्ष की आयु प्राप्त की। उनके द्वारा लिखी हुई कविताओं की पुस्तकें, दर्शन व संस्कृत व्याकरण पर लिखे हुए लेखों के संग्रह उपलब्ध हैं।

जन जन में नारायणीयम के सुप्रचलित होने का कारण उसकी असामान्य और अद्वितीय विशेषताएं हैं। प्रथमतः यह अत्यन्त वेदना और व्यथा में रचित है। इसलिए इसमें कवि की हार्दिक भक्तिपूर्ण प्रार्थना मुखरित हुई है। दूसरे, इसकी रचना प्रथम पुरुष में हुई है, अर्थात् भगवान से सम्मुख वार्तालाप के तौर पर। इसलिए जो कोई भी इसका पाठ करता है, वह मानो स्वयं ही भगवान को सम्बोधित करता है। यह भगवान और भक्त में एक चुम्बकीय आकर्षण पैदा करता है। तीसरे, यह स्तोत्र सिद्ध करता है कि जो भी इसका पारायण पूर्ण भक्ति और शरणागति से करता है, उसे - आयु, आरोग्य और सौख्य' निश्चित रूप से प्राप्त होते हैं।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः ॥

दशक १ भगवन्महिमानुवर्णनम्

सान्द्रानन्दावबोधात्मकमनुपमितं कालदेशावधिभ्यां
निर्मुक्तं नित्यमुक्तं निगमशतसहस्रेण निर्भास्यमानम् ।
अस्पष्टं दृष्टमात्रे पुनरुरुपुरुषार्थात्मकं ब्रह्म तत्त्वं
तत्तावद्भाति साक्षाद् गुरुपवनपुरे हन्त भाग्यं जनानाम् ॥ १ ॥

सान्द्र-आनन्द-अवबोधात्मकं	घनीभूत आनन्द ज्ञान स्वरूप
अनुपमितं	उपमारहित
काल-देश-अवधिभ्यां निर्मुक्तं	काल (एवं) स्थान की अवधि से पूर्ण रूप से मुक्त
नित्यमुक्तं	(एवं) सदा सर्वदा मुक्त (माया से)
निगम-शतसहस्रेण	वेदों के सैंकड़ों एवं सहस्रों (वाक्यों) द्वारा
निर्भास्यमानं	खुलासा किये जाने पर भी
अस्पष्टं	(जो) स्पष्ट नहीं हैं (किन्तु फिर)
दृष्टमात्रे पुनः	दर्शन करने मात्र से (उसी समय)
उरु-पुरुषार्थात्मकं	महान पुरुषार्थ (मोक्ष) रूप (हो जाता है)
ब्रह्म तत्त्वं	(ऐसा जो) ब्रह्म तत्त्व है
तत् तावत्	वही निश्चित रूप से
भाति साक्षाद् गुरुपवनपुरे	प्रकाशित हो रहा है साक्षात् रूप में, गुरुवायुर में
हन्त भाग्यं जनानाम्	अहो! यह सौभाग्य है जनसमुदाय का

वह महा सत्य, वह ब्रह्म तत्त्व, जो घनीभूत आनन्दमय है, जो ज्ञान स्वरूप है, जो काल और स्थान की सीमा से पूर्ण रूप से और सदा मुक्त है, जिसे सैंकड़ों सहस्रों वाक्य प्रकाशित करने की चेष्टा करते हैं, फिर भी जो अस्पष्ट है, किन्तु फिर दर्शन करने मात्र से जो महान पुरुषार्थ (मोक्ष) रूप हो जाता है, ऐसा जो ब्रह्म तत्त्व है, वही यहां गुरुवायुर में साक्षात् कृष्ण प्रतिमा रूप से प्रकाशित हो रहा है। अहो! यह जन समुदाय के लिये कितने बड़े सौभाग्य की बात है।

एवंदुर्लभ्यवस्तुन्यपि सुलभतया हस्तलब्धे यदन्यत्
तन्वा वाचा धिया वा भजति बत जनः क्षुद्रतैव स्फुटेयम् ।
एते तावद्वयं तु स्थिरतरमनसा विश्वपीडापहत्यै
निश्शेषात्मानमेनं गुरुपवनपुराधीशमेवाश्रयामः ॥ २ ॥

एवं	ऐसी
-----	-----

दुर्लभ्य-वस्तुनि अपि	दुर्लभ वस्तुएं भी
सुलभतया	सुलभता से
हस्त-लब्धे	हाथ में आ जाने पर
यत्-अन्यत्	भी, जो अन्य (सांसारिक) वस्तुओं का
तन्वा वाचा धिया वा	(अपने) शरीर, वाणी और बुद्धि से
भजति बत जनः	सेवन करता है, हाय जो जन
क्षुद्रता-एव स्फुट-इयं	(उसकी) यह क्षुद्रता ही है, निश्चित रूप से
एते तावत्-वयं तु	फिर भी हम (भक्त) तो
स्थिर-तर-मनसा	निश्चल मन से
विश्व-पीडा-अपहत्यै	समस्त पीडाओं के समूल नाश के लिये
निश्शेष-आत्मानम्-एनं	सर्वस्व आत्म स्वरूप इन
गुरुपवनपुराधीशम्-	गुरुपवनपुर के स्वामी का
एव-आश्रयामः	ही आश्रय लेते हैं

ऐसी दुर्लभ वस्तु भी जब इतनी सरलता से हाथ में आ गई हो, फिर भी यदि व्यक्ति अपने शरीर वाणी अथवा बुद्धि से अन्य सांसारिक वस्तुओं का सेवन करता है तो, यह स्पष्ट रूप से निश्चय ही उसकी क्षुद्रता है। किन्तु हम यहां समस्त भक्त जन, निश्चल मन से, समस्त पीडाओं के नाश के लिये, इन गुरुपवनपुर के स्वामी, भगवान गुरुवायुर का ही आश्रय लेते हैं।

सत्त्वं यत्तत् पराभ्यामपरिकलनतो निर्मलं तेन तावत्
भूतैर्भूतेन्द्रियैस्ते वपुरिति बहुशः श्रूयते व्यासवाक्यम्।
तत् स्वच्छत्वाद्यदाक्षादितपरसुखचिद्गर्भनिर्भासरूपं
तस्मिन् धन्या रमन्ते श्रुतिमतिमधुरे सुग्रहे विग्रहे ते ॥ ३ ॥

सत्त्वं यत्- तत्	वह शुद्ध सत्व गुण जो
पराभ्याम्-	अन्य दोनो (रजो गुण एवं तमो गुण) की अपेक्षा (शुद्ध है)
अपरिकलनतः	और उन दोनों के मिश्रण से रहित
निर्मलं	(अतएव) पूर्ण शुद्ध
तेन तावत् भूतैः -	इसी (परम शुद्ध सत्व) से, निर्मित हुआ
भूतेन्द्रियैः - ते वपुः -	पञ्च भूतों और इन्द्रियों सहित आपका विग्रह (लीला शरीर)
इति बहुशः श्रूयते	यह (तथ्य) बहुधा सुनने में आता है

व्यासवाक्यं	जो श्री व्यास जी के द्वारा कहा गया है
तत् स्वच्छत्वात्-	वह आपका स्वरूप शुद्धता के कारण,
यत्-आच्छादित-परसुखचित्-गर्भ-निर्भासरूपं	जिसमें निरावृत परमानन्द चिन्मय ब्रह्म समाविष्ट है, सदा भासित होता है
तस्मिन् धन्या रमन्ते	उस स्वरूप में, सौभाग्यशाली जन (पुण्यवान जन) रमण करते हैं
श्रुति-मति-मधुरे	उस स्वरूप के बारे में सुनने और मनन करने का सुख
सुग्रहे विग्रहे ते	(भक्त जन सुगमता से पाजाते हैं) आपके उस श्री विग्रह में

वह सत्व गुण, अन्य दो गुणों- रजो गुण एवं तमो गुण की अपेक्षा परम शुद्ध है एवं उन दोनों के मिश्रण से रहित है। उसी सत्व के उपादन द्वारा सात्विक भूतों एवं इन्द्रियों सहित आपका स्वेच्छामय लीला शरीर निर्मित हुआ है। यह तथ्य बारंबार व्यास जी ने पुराणों में कहा है और वही सुनने में आता है। आपके उस सदाभासित निर्मल विग्रह में परमानन्द चिन्मय ब्रह्म समाविष्ट है। सौभाग्यशाली पुण्यवान भक्त जन, मर भाव से श्रवण एवं मनन करने योग्य, सकल इन्द्रियाह्लादक आपके श्रीविग्रह में सुगमता से रमण करते हैं।